IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन

पल्लवी नागर
सहायक प्राध्यापक, अरिहंत महाविद्यालय, इंदोर

सारांष

आज समाज में जो विकट असमानता व्याप्त है, उसका मूल कारण ईष्वरीय भाव विहीन सभ्यता का सिद्वांतो में अभाव है। गीता के अस्तित्व में भगवान अर्थात वह सर्वषक्तिमान अदृष्य कारक है, जिनसे प्रत्येक जीव मात्र की उत्पत्ति होती है एवं जिनके द्वारा सबका पालन पोषण होता है। भौतिक विज्ञान ने प्रकृति के सूक्ष्म तत्व की खोज के लिए जो प्रयास किये गए है, वे ईष्वरीय अस्तित्व के बिना अपूर्ण है। वास्तविकता में जो भी अस्तित्व में है, उन सभी जीव मात्र की उत्पत्ति का एक अस्तित्व है। इस अस्तित्व की व्याख्या श्रीमद् भगवद् गीता में ज्ञानयुक्त और प्रामाणिक रुप से प्रस्तुत की गई है।

ज्ञान के क्षेत्र में श्रीमद् भगवद् गीता का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इसमे व्यक्ति के जीवन का सार निहित हैं। गीता में ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग, राज योग, एकेष्वरवाद आदि की बहुत सुंदर ढंग चर्चा की गई है। गीता मनुष्य को कर्म का महत्व समझाती है। मनुष्य जीवन में कर्म की वास्तविक षुरूआत सर्वप्रथम छात्र जीवन अर्थात अध्ययन क्षेत्र से ही होती है। छात्र द्वारा ज्ञान प्राप्ति के लिए किया गया कर्म सम्पूर्ण जीवन का पथ निर्धारित करता हैं। छात्र जीवन के कर्म पथ पर आने वाली बाधाओं को पार करने में गीता के शैक्षिक तत्वों का समावेष षिक्षा अध्ययन में महत्वपूर्ण है, अतः प्रस्तुत लेख में श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिंदु – श्रीमद् भगवद् गीता, ज्ञान योग ,कर्म योग, भक्ति योग, एकेष्वरवाद ।

प्रस्तावना :

श्रीमद् भगवद् गीता में कुल 18 अध्याय है श्रीमद् भगवद् गीता में कुल 700 श्लोक हैं। जिसमें से श्री कृष्ण ने 574 श्लोक, अर्जुन ने 85 श्लोक, धृतराष्ट्र ने 1 श्लोक, तथा संजय ने 40 श्लोक कहे हैं। श्रीमद् भगवद् गीता में जीवन के विभिन्न पहलुओं से जीवन जीने के तरीको के बारे में मानव समाज को बताया गया है। अतः श्रीमद् भगवद् गीता दुनिया के सबसे बडे महाकाव्य महाभारत के प्रथम अध्याय षांतिपर्व का एक हिस्सा है। इसीलिए इसका दूसरा नाम गीता उपनिषद भी है। गीता का प्रमुख सार यह है कि मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए। मनुष्य को अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होना चाहिए क्योंकि अंत में जीत सदा सत्य एवं धर्म की ही होती है। परिवर्तन ही संसार का नियम है यही शास्वत सत्य है जो हमेषा कायम रहता है।

औचित्यः

वर्तमान षिक्षा केवल धनोपार्जन के लिए होता है न कि ज्ञान के लिए। यदि पूर्वजों के द्वारा स्थापित वेद पुराण के निर्देषानुसार षिक्षा अध्ययन का संचालन मानव धर्म को जिविकोपार्जन के साथ–साथ आध्यात्म द्वारा आत्मज्ञान में भी हो तो हम उत्तरोत्तर सामाजिक प्रगति कर सकते हैं। षिक्षा मानव को अन्य जीवंत प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। एवं ज्ञान की विषिष्टता उच्च कोटि में खड़ा कर देती है, मनुष्य को आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण कर तेजवान, रूपवान ओजपूर्ण बनाकर, प्रकाषमान कर देती है। परंतु इस सबके लिए श्रीमद् भगवद् के सिद्धांतों में वर्णित षिक्षा के आयामों को समझना होगा, श्रीमद् भगवद् गीता के संवादों

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

में षिक्षा के विभिन्न आयामों जैसेः– दार्षनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, व्यवहारिक आध्यात्मिक, नैतिक, आर्थिक और मूल्यपरक विष्लेषण हैं जो मानव के अतृप्त जीवन को संतृप्त की ऊँचाइयों तक ले जाने में समर्थ है। आज श्रीमद् भगवद् गीता मे वर्णित षिक्षा की गहन आवष्यकता है। युगों–युगों से वेदों और पुराणों ने मानव का मार्गदर्षन किया है।

आज की षिक्षा में श्रीमद् भगवद् गीता के सिद्धांतों को अपनाया जाये तो यह निष्चित है कि वर्तमान समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। षिक्षा के अक्षय होने से इसके उद्देष्य भी विषिष्ट है। केवल उदरपूर्ति और आजीविका के भौतिक सुख–सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए षिक्षा नही हो सकती, ये तो सामान्य उद्देष्य है और मानव ही नहीं पशु–पक्षियों के भी यही उद्देष्य होते है। यदि षिक्षा अक्षय है तो भला उसके उद्देष्य इतने संकीर्ण और साधारण कैसे हो सकते है? ईश्वर तो अलौकिक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अचिन्त्य, अविकारी, अविनाषी, निर्विकार और असाधारण है तो षिक्षा भी इसी प्रकार के गुणों को स्वयं में समेटे हुए है।

प्रस्तुत शोध में षिक्षा के विभिन्न आयामों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि श्रीमद् भगवद् गीता का उद्देश्य मानव को सच्चे अर्थो में मानव से श्रेष्ठ बनाने का प्रयास है।

समस्या कथन :– श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन

परिसीमन :– प्रस्तुत लेख में भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन :–

शर्मा (2010) ने श्रीमद् भगवद् महापुराण के प्रमुख संवादो में वर्णित षिक्षा के विभिन्न आयामो का विष्लेषणात्मक अध्ययन किया। निष्कर्षः– विनम्रता तथा आदर के साथ ही श्रद्धा भी षिक्षा के लिए आवष्यक है।

खेमानी (2013) ने "गोस्वामी तुलसी दास रचित राम चरित मानस मे अन्तर्निहित मूल्यों का विश्लेषण एवं वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता का अध्ययन" प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य– तुलसीदास रचित रामचरित मानस में अन्तर्निहित विश्लेषित मूल्यो की वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता का अध्ययन करना। शोध विधि – प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोध करता द्वारा वर्णात्मक, विवरणात्मक एवं विषय वस्तु विश्लेषण के साथ सम्बंन्धित साहित्य शोध विधि का प्रयोग किया गया । निष्कर्ष– गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस की शिक्षा के विशिष्ट क्षेत्रों, मनोविज्ञान, काम शिक्षा, समाज विज्ञान, इतिहास विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, योग शिक्षा, शस्त्रयुद्ध विज्ञान, रसायन औषधीय विज्ञान, तकनीकी विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, राजनीति विज्ञान आदि में प्रासंगिता परिलक्षित होती हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में –

- **नीतिषास्त्र**

हमारा जीवन मानसिक दबावों व तनाव से भरा है। किसी भी परीक्षा कि घड़ी में हम विरोधी आवेगों के मध्य लड़खड़ा जाते है, और यह निष्चय नहीं कर पाते की कौनसा मार्ग अपनायें अथवा क्या करें। वास्तव में मनुष्य की समस्या यह है कि जब परस्पर विरोधी आवेग हमारे समस्त प्रयत्नों को गतिहीन व अषक्त कर दे और हम अपने आप को पूर्ण अनिष्चिता की स्थिति में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

पाये तो उस अवस्था में एक संतुलित जीवन कैसे बितायें ? कैसे अपनी बुद्धि एवं मानसिक शांति को बनायें रखे ? शोक और पीड़ा आदि को किस प्रकार शांतिपूर्वक सहन करें और ईमानदारी से अंतःकरण की आवाज के अनुकूल कार्य करे ? इन समस्याओं को हल करने के लिए श्रीमद् भगवद् गीता के सिवाय किसी भी ग्रंथ में समस्याओं हल नहीं मिलता। हमें सुख की अनुभूति हमारे इस ब्रह्माण्ड़ीय प्रवाह में प्रतिबंधित भागीदारी के कारण होती हैं। ऐसी स्थिति में प्रासंगिक किसी समस्या के समाधान के लिए गीता व्यक्ति को निष्काम कर्म का आदेश देती हैं। सभी मानव बुराइयों के उत्कृष्ट समाधान के लिए और बिना किसी धार्मिक अथवा सांस्कृतिक सम्बंध का ध्यान रखें सभी मानव संदर्भो में प्रभावी हैं। इस अर्थ में गीता एक सर्वभौम नीतिषास्त्र होने का दावा करती हैं।

तस्माच्छास्यं प्रमाण ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्र विद्यानोक्तं कर्म कर्तुमिहाईसि।। 24/16।।

- **तार्किक और आध्यात्मिक षिक्षा**

भगवत गीता में शिक्षा और ज्ञान के दायरे को भगवत गीता में मुख्य रुपसे दो प्रकार के ज्ञान की चर्चा की गई है– तार्किक ज्ञान को ज्ञान के माध्यम से दुनिया में उपलब्ध चीजों के बाहरी रुप पर चर्चा करने की क्षमता के रुप में पहचाना गया है और इंद्रियो के साथ माना जाता है। तार्किक ज्ञान को 'विज्ञान' (भगवत गीता 5.8–9, 9.6, 13.3) कहा जाता है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्यादेतत्थयं त्यजेत्।। 21/16।।

- **अंधकार से प्रकाष की और**

गीता में मुख्य पात्र केवल अर्जुन व कृष्ण ही है। वास्तव में षिष्य जब संसार की यात्रा प्रारंभ करता है। अनेक प्रकार के विघ्न बाधाएं उसके सम्मुख आकार उपस्थित होती है। यदि षिष्य को योग्य गुरू मिल जाते है। तब गुरू के प्रति यदि सच्ची निष्ठा, श्रद्धा, कर्म के प्रति आस्था र्निलोभ हो कर षिष्य गुरू के वचनों दृढ़ता के साथ अधिकृत करता है, तो ही उसे जीवन में सफलता प्राप्त होती

पश्य में पार्थ रूपाणि षतषोऽथ सहस्त्रयः।
नाना विद्यानि दिव्यानि नाना वर्णाकृतीन च।। 5/11।।

- **साधक + साध्य + साधन जीवन का आनन्द**

आरूरूक्षेमुर्निर्योगं कर्म कारणमुच्यते।
योगरूढस्य तस्यैव षमः कारणमुच्यते।। 6/3।।

कर्मयोग रूपी पहाड़ की चोटी पर पहुँचना हो तो यह कर्म मार्ग रूपी सोपान का कभी परित्याग नहीं करना चाहिए। मार्ग पर चलते हुए पहले यम, नियम रूपी आधार भूमि पर से योगासन रूपी पगडंडी पकड़कर टीले पर चढ़ जाना चाहिए।

- **सुखी जीवन के लिए**

. प्रकृतें क्रियमाणानि ग्रणेः कर्माणि सर्वसः
अहंकार विमूढात्मा कर्ताहायेति मन्यते।। 3/27।।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

हम जो भी कर्म करते है वह सब पकृति के गुणों अधीन किये जाते है परन्तु अंहकार से ग्रसीत व्यक्ति यह मानता है कि जो भी किया वह में ही कर्ता हूँ।जो निन्दा और स्तुति कों समान भाव से देखता है, मौन रहता हैं जो कुछ ज्ञान मिल जाये उसे ग्रहण कर उसे स्थिर चित द्वारा ग्रहण कर्ता है। वह विधार्थी है। वही विधार्थी मुझें प्रिय है।षिक्षार्थी को चाहिये की वह (इन अनर्थो के मूल) काम, क्रोध, लोभ इन तीनों को त्याग दे। श्रद्धावान, साधनपरायण और जितेन्द्रिय मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह तत्काल यथा योग्य शांति को प्राप्त होता है।

- **विपरीत परिस्थितियों में सफलता हमारे कौशल की कसौटी है भगवद् गीता**

मनुष्य स्वाभाविक रूप से आलस्य प्रिय प्राणी है। जब परिस्थितियां बाधाएँ खड़ी करने लगती है विधार्थी घबराकर उससे मुडकर भगाने का प्रत्यत्न करता है। यह उचित नहीं है। गीता यही षिक्षा देती है, कि हमारा बाधाओं को चिर कर रास्ता बनाकर समाधान की और बढ़ना ही श्रेष्ठकर है।

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।। 2/2।।

मनुष्य को पहले अपने आप से प्रष्न करना चाहिए। कि मुझे कौनसा कार्य करना है। जिसके द्वारा मेरा मानव जीवन सफल हो सकें। जीवन में उठने वाले प्रष्नो का समाधान श्रीमद् भगवद् गीता में दिये गये है।

- **त्यागः– श्रीमद्वगवद्गीता का श्रेष्ठम आदेष**

सुसंस्कार बस ऐसा सुयोग सुलभ हो जाय कि युवास्था में ही इन्द्रिय निग्रह और मन का दमन करते हुए समस्त विषय प्रपंच का त्याग कर सकें तो निःसंदेह जो लाभ सैकडो जन्म बिता देने पर भी नहीं मिलता, वह एक हीं जीवन के थोडे समय में ही प्राप्त हो सकता है। इसके लिए युवा अवस्था ही त्याग का सर्वोतम अवसर हैं। प्राचीन कालीन गुरूकुल षिक्षा पद्धति ही ने आज संसार में ऐसे मार्गदर्षक दिये जो आज भी उनकी स्मृति एवं उच्च जीवन का आदर्ष प्रस्तुत करते हैं त्याग से ही सत्य का विकास होता है, इसी शक्ति से पथिक गन्तव्य पर अग्रसर हो सकता है।

- **भगवद् गीता में षिक्षा का पाठ्यक्रम**

भगवद् गीता में प्रष्नउत्तरों द्वारा ऐसा पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया हैं, जो ज्ञान व अपार ज्ञान से प्राणी कों अवगत कराता हैं। अमूर्त व मूर्त ज्ञान की प्राप्ति के लिए षिक्षा में साहित्यक, सामाजिक, धार्मिक व वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन आवष्यक हैं। भौतिक ज्ञान के साथ–साथ आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति भी व्यक्ति के लिए नैतिक जीवन जीने हेतु आवष्यक हैं। परा विद्या के अर्न्तगत–आत्म ज्ञान और ब्रह्म ज्ञान प्राप्त होता हैं। जो नित्य और सनातन है, पूर्ण ज्ञान है, नीतिपूर्ण ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करतें समय छात्र की अपूर्णता व अस्थिरता की और भी ध्यान आकृष्ट करना चाहिए ताकि छात्र में सदगुणों का उदय हो। जिससे वह सही गलत में भेद कर सके।

अपरा विद्या के अन्तर्गत–सभी प्रकार के विज्ञानो का अध्ययन जैसे रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, नक्षत्र विद्या यान्त्रिकी, वनस्पतीशास्त्र, जीव शास्त्र, शरीर व स्वास्थ्य विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित, भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, क्षत्रियो के लिए धनुर्विद्या, मन तथा बुद्धि द्वारा प्राप्त अनुभवात्मक ज्ञान और ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान, सभी प्रयोगात्मक व अवलोकन की दृष्टि से मान्य हैं। इसके साथ ही सभी भाषाओं, कला व साहित्य के ज्ञान की भी अपेक्षा की गई हैं। गीता के 18 वे अध्याय में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

चारों वर्णो के कर्मो का विवरण देते हुए, सफल जीवन जीने हेतु उपयुक्त कार्य करने की दिशा धारा मिलती हैं। इसके अतिरिक्त छात्र की रूचि बुद्धि, स्वभाव व वर्ण के अनुकूल शिक्षा देने का प्रावधान बताया गया हैं।

- **श्रीमद् भगवद् गीता के षैक्षिक तत्व**

भारत देष ऋषि मुनियों का देष है, जब दुनिया में कोई पढ़ना–लिखना नहीं जानता था तब भारत नें वेद लिख दिए थे। जब दुनिया में षिक्षा नहीं थी तब भारत में गुरूकुल चलते थे। लेकिन विदेषी आक्रमणकारीयों ने सोने कि चिड़िया कहलाने वाले भारत पर आक्रमण किया और भारतीय संस्कृति को मिटाने का प्रयास करने लगें। और सबसे बडा प्रहार हमारे वैदिक गुरूकुलो पर हुआ। वैदिक षिक्षा पद्धति को बदलने के लिए गुरूकुलो को खत्म कर कान्वेंट विद्यालयों की स्थापना की गई।

- **गीता में वेद षास्त्रों का सार**

वेदों में ईष्वर के अनेक नाम बताए है। परन्तु उपनिषदों में ईष्वर को अनाम और अरूप बताया। इस निराकार ब्रह्म की उपासना चिन्तन–मनन से अर्थात् ज्ञान से ही हो सकती थी। गीता में निराकार स्वरूप को भी अपना लिया रूप वाले अवतारों की उपासना को ज्यादा सरल बताया। अर्जुन ने पूछा कि भगवान ! सगुण और निर्गुण के भक्तो में कोन सा–भक्त श्रेष्ठ है, तो भगवान उत्तर देते है

"भक्ति कठिन है निराकार की, इन्द्रिय–निग्रह कठिन महान।
ध्यान जमाना प्रभु अरूप में, कठिन तपस्या दुख की खान।।" 12/5।।

- **मनुष्यो की चिन्ताओं को समूल नष्ट करना**

भगवद् गीता के द्वारा लोगों को चिन्ताओं और तनावों से मुक्ति मिली। लोगों को चिन्ता क्यो सताती है? वे तनाव में क्यो रहते है? जीवन में सर्वदा सफलता नहीं मिलती है। व्यक्ति को कभी कभी असफलता भी मिलती हैं। यह प्रकृति का नियम हैं। इन घटनाओं को जीवन का अगं समझना चाहिए।

परन्तु अधिकांशलोग अपनी भावनाओं को ठीक–ठीक विकास नहीं कर पाते। कोई काम बिगड़ गया तो उनके हाथ–पैर फूल जाते है। दिन–रात चिन्ता सताती रहती हैं। चिन्ता के कारण, शरीर की मांसपेषियों में खिंचवा उत्पन्न होता है। तनाव की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

"चिन्ता ज्वाला शरीर में बन दवा लगी जाए।
प्रगट धुआँ उपजे, मन अन्दर धुँधियाय।।"

तब क्या करें? गीता में श्री कृष्ण कहतें हैं की चिन्ता और तनाव को कम करना है फल की चिन्ता छोड़ दें तो चिन्ता भी खत्म हो जाती हैं। प्रायः बच्चे खेल–खेल में हार–जीत में लड़ते झगड़ते हैं। जो खेल मनोरंजन के लिए खेला गया था वह मनोव्यथा का कारण बन गया। यह फल से निपटनें का स्वाभाविक परिणाम है। इस लिए गीता में कहा गया है फल कि चिन्ता करना छोड़ दें।

ध्यायतो निषयान्पुंसः सङांस्तेषूपजायते।
सङात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। 2/62।।
क्रोधाद्भति सम्मोहः सम्मोहात्मृतिविभ्रमः।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।2/63।।

यदि मन में विषयों की लेषमात्र भी स्मृति षेष रह जाय तो वह असंगत होने पर भी विषयों की संगति करा ही देती है। इसी संगति से वासना प्रगट होती है। जहा अंतःकरण में विषयों के सम्बंध में काम वासना उत्पन्न हुई वहा क्रोध पहले ही आ जाता है और जहा क्रोध आया वहा उसके साथ अविचार रखा हुआ है। अविचार प्रगट हुआ, तब स्मृति ठीक नष्ट हो जाती है।

जब अज्ञान अन्धकार के द्वारा सब कुछ घिर जाता है तब बुद्धि भीतर ही भीतर व्याकुल हो जाती है। बुद्धि भी भ्रम में पड़ कर इधर–उधर भटकने लगती है। बुद्धि की दषा एक दम विकट हो जाती है और विवके षक्ति का भी बिलकुल सफाया हो जाता है। चेतन्य के विनाष से जो स्थिति षरीर की होती है, वैसी ही स्थिति बुद्धि के नाष से मनुष्य की हो जाती है। एक छोटी सी चिगांरी रूई के गट्ठर को भस्मी भुत कर देती वैसे ही विद्यार्थी जीवन के समस्त ज्ञान को समाप्त कर देती है। सारा जीवन पतन की और अग्रसर हो जाता है।

सर्व साधारण के लिए मुक्ति का द्वार :–

"जो करता है जो खाता है, जीवन के जीतने काम।
सारे कर्म सोंप दे मुझको, मिले समर्पण से हरि धाम।।" 9/27।।

गीता ने साधारण से साधारण लोगों के लिए आत्मोद्धार करना या मोंक्ष प्राप्त करना बहुत आसान बनादिया। खाना–पिना, सोना–जागना जैसे काम भी मोक्ष के द्वार बन गए। बस एक छोटी सी षर्त है जीस का पालन करना कठीन नहीं है। आप अपने सभी कार्यो को भगवान को सोंपदें। इतनी सी बात से चमंत्कार हो जाता है। जिस तरह कागज का एक छोटा–सा टुकड़ा सरकारीमोहर लगने मात्र से नोट बन जाता है, ठीक उसी तरह साधरण कर्म भी भगवान की मोहर लगने से अमूल्य बन जाता हैं।

- **मन को स्थिर करने के लिए सरल उपाय**

मनुष्य का बहुत चंचल होता है। कही पर ज्यादा देर टिकता नहीं। हर समय इधर–उधर भागता–फिरता है। इसकी चाल में गजब की तेजी है क्षण–भर में कहा पहुँचेगा, इसका अनुमान लगाना असम्भव है। मन की चंचलता पर नियन्त्रण करना कठिन कार्य है। मन को वष में किए बिना सफलता पाना कठिन हैं।**"असंयतात्मना योगो दुष्प्राप्य"**अर्थात् मन के घोड़े को बे लगाम दौड़ते देने वालों को योग की प्राप्ति नहीं होती। (6–36)

गीता में मन को स्थिर करने के लिए दो सरल उपाय बताए है–

1 भावना–प्रधान लोगों के लिए रागात्मक उपायः– मनुष्य भावनात्मक प्राणी हैं। संसार के अधिकांष लोग भावना अधिक प्रबल होती है और वे भावनाओं में बहकर कार्य करते है। अतः गीता में भावना–प्रधान मनुष्य के लिए चार प्रकार के उपाय बताए हैं।

- पहला उपाय **ध्यान योग** है, जिसमें मन की बिखरी हुई ष्षक्तियों को एकत्र किया जाता है।
- दूसरा **भगवान की शरण** लेने का सब से सरल रास्ता है।
- तीसरा एक ही तरह के संस्कार का अभ्यास लगातार करनें वाला **सत्य योग** है।
- चौथा साधारण से साधारण व्यक्ति के लिए सबसे सरल **समर्पण योग** है।

2 ज्ञान–प्रधान लोगो के लिए चिन्तनात्मक उपाय – समाज में कुछ लोग चिन्तनषील होते हैं। वे हर बात को तर्क की कसौटी पर तौलते हैं। और उसके अनुसार आचरण भी करते हैं। ऐसे लोगो के लिए गीता चिन्तन प्रधान उपाय बताए हैं। ये दो प्रकार के हैं–

- आत्मानात्मा विवेक अर्थात इसमें सारग्रहण करके रसहीन वस्तु को अलग करने का उपाय बताया गया हैं।
- गुणातीत विवेक अर्थात इस विधि में प्रकृतिजन्य गुणों की अलग–अलग पहचान करके अलग करने का मार्ग बताया हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

जीवन और मृत्यु

तुम समझते हो की तुम एक बार ही पैदा होते हो और एक ही बार मरते हो यह तुम्हारी भूल है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा है–"मेरे और तुम्हारे अनेक जन्म हुए हैं, मैं उन्हे जानता हूँ परन्तु तुम उन्हे नहीं जानते।" जब मनुष्य अनेक जन्मो का एक ही षरीर में ज्ञान कर लेता है तब वह आत्मा से परमात्मा बन जाता है। तुम्हारे विचार से षरीर से वियोग ही मृत्यु और षरीर से संयोग का नाम जीवन है यह व्याख्या गलत है।

जब तुम्हारा संयोग आत्मा से, चेतन अथवा विवेक से होता है, तब तुम्हारा जन्म होता है, इसके विपरीत जब तुम्हारा उक्त चेतन से वियोग होकर जड़ तत्व से संयोग होता है तब तुम्हारी मृत्यु होती है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शेध अध्ययन के परिणामों के निहितार्थ षिक्षा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े व्यक्तियों के लिए है। ये व्यक्ति हैं– षिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक ,पाठ्यचर्या, निर्माता, निति निर्धारक, समाजषास्त्री।

शिक्षको के लिए

वर्तमान काल में षिक्षा का स्वरूप ज्ञानात्मक एवं तकनीक पर आधारित है किन्तु निष्चित रूप से षिक्षा का उद्देष्य मात्र छात्रों को ज्ञानात्मक विकास करना या उन्हें तकनिकी ज्ञान देना ही नहीं है अपितु विद्यार्थियों का भावात्मक मूल्य पर आधारित चरित्र निर्माण करना भी षिक्षा का उद्देष्य है। ताकि छात्रो को समाज के मानवीय मूल्यों से परिचित कर उनका चरित्र उज्जवल बनाया जा सके ताकि आने वाले सामाजिक स्वरूप मूल्यपरक एवं सभ्य समाज बन सके। इस के साथ–साथ भाषा आधारित विषयों जैसे हिन्दी एवं संस्कृत में भी मूल्य आधारित पाठ संलग्न होते हैं किन्तु वर्तमान में उक्त सभी षिक्षा मात्र औपचारिक हैं, मूल्य या नैतिक षिक्षा को सप्ताह में एक कालांष में समाहित कर दिया जाता है, ताकि छात्रों के चरित्र में मूल्यों का विकास हो। प्रस्तुत शोध कार्य इसी दिषा में किया गया प्रयास है।

विद्यार्थियों के लिएः

आज के इस आधुनिक युग में विद्यार्थीगण अपना विकास करना चाहते हैं जिससे कि वे भी इस परिवर्तनषील समाज में सांमजस्य पूर्वक स्थापित हर सकें। उनका मूल्यात्मक विकास हो। भविष्य उज्जवल बना सके, अपने व्यक्तित्व का विकास हो सके। इस के लिए विद्यार्थी को अपनी योग्यता के द्वारा समस्या का समाधान करने में तथा व्यवहारिक, नैतिक ज्ञान प्राप्त करने में खुद को असमर्थ पाता है। जिसके लिए उसे उचित दिषा निर्देषन की आवष्यकता है। छात्रों के जीवन में ऐसा ज्ञान भर दिया गया है कि विज्ञान एवं तकनीक के द्वारा ही व्यक्तित्व का विकास सम्भव है किन्तु देखा जाए तो बिना एक अच्छा इन्सान बने किसी भी प्रकार का विकास महत्वहीन है। वह आर्थिक, ज्ञानात्मक प्रगति किस काम की तो मूल्यो से सींचित न हो। श्रीमद् भगवद् गीता एक ऐसा बेहतर स्त्रोत हो सकता है जो छात्र के जीवन को मूल्यपरक षिक्षा से अभिसंचित कर उसके एक बेहतर मानव बनाए एवं उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करे।

पाठ्यचर्या निर्माता के लिए

पाठ्यचर्या निर्माता पुस्तकों को वर्तमान आवष्यकताओं, समस्या को सम्मिलित करते हैं। विद्यालयों में नैतिक षिक्षा, मूल्य षिक्षा जैसे विषयो का समावेष किया जाता है। उनमें भारतीय संस्कृति से सम्बंधित प्रसंगो एवं पौराणिक आख्यानों को प्रेरणा स्वरूप डाला जाता हैं। पाठ्यचर्या निर्माताओं को चाहिए की वे छात्रो को गीता के ष्लोक, नाटक, समाज में व्यावहारिक सेवा कार्य आदि पाठ्यचर्या सामिल करना चाहिए। प्रस्तुत शोध कार्य पाठ्यचर्या निर्माताओं को हेतु विचार करने को प्रेरित करता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

अभिभावकों के लिए:

बालक का प्रथम गुरू एवं उसकी प्रथम पाठशाला उसका परिवार है। बालक में संस्कारो एवं मूल्यो का विकास उसके घर से ही होना शुरू हो जाता है। प्रत्येक अभिभावक यही चाहता कि उसके बालक में मानविय मूल्यों का विकास हो इस हेतु यह परम आवष्यक है कि परिवार में संस्कृति एवं संस्कारों का पालन होता है जैसे– प्रातः एवं सांयकाल, प्रभु स्मरण, अर्चन, पुजन, मागंलिक कार्यो में पाठों का अयोजन जैसे गीता पाठ, रामसयण पाठ, गायत्री मंत्र आदि गतिविधियाँ होती है, जो प्रत्येक बालक के मूल्यों का विकास करती है एवं उनमें पवित्र संस्कारों को अभिसंचित करती है। प्रत्येक अभिभावक का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने बालक को मूल्यपरक ग्रंथों जैसे श्रीमद् भगवद् गीता, रामचरित मानस आदि से जोड़े। जिससे निश्चित रूप से प्रत्येक बालक में नैतिक विकास एवं शालिन व्यक्तित्व का विकास हो सके।

नीति निर्धारको के लिए

निर्धारकों का यह कर्त्तव्य बनता है षिक्षक चयन की प्रक्रिया के समय ऐसे षिक्षको का चयन करे जो श्रेष्ठ हो तथा श्रीमद् भगवद् गीता जैसे मूल्य परक ग्रंथों से जुड़ा हो जिसके व्यक्तित्व में स्वयं मूल्य एवं नैतिकता दृष्टिगोचर हो यह सब–कुछ तब सम्भव है जब नीति निर्धारक सम्पूर्ण ज्ञान मण्डित षिक्षकों का चयन करें। श्रीमद् भगवद् गीता जैसे मूल्यपरक ग्रंथों के जानकर एवं व्यवहारिक रूप से मूल्यपरक व्यक्तित्व के धनी व्यक्तियों का चयन करें। प्रस्तुत शोध कार्य भी इसी दिषा में किया गया एक लघु प्रयास है, जिससे कि सामान्य जनमानस इस बारे में विचार करे कि बालकों को श्रीमद् भगवद् गीता से जोड़कर मूल्य विकास की और अग्रसर करें।

समाजशषास्त्रियों के लिए

समाज को यदि हमें परिभाषित करें तो एक निष्चित जन समूह जो किसी निष्चित भूभाग पर निवास करता हो। जिनकी एक निष्चित सभ्यता एवं संस्कृति हो जिनके निष्चित उद्देष्य हों उसे समाज कहते हैं। समाज के नागरीकों में मूल्यों का विकास सम्पूर्ण समाज को षालीन व सभ्य बनाता है। इस हेतु केवल षिक्षा के औपचारिक ही नहीं अनौपचारिक साधनों का महत्व है। जैसे तीज–त्यौहार, पर्व, संस्कार, संस्कृति, ग्रथं अध्ययन, धार्मिक आयोजन आदि। प्रस्तुत शोध इसी दिषा में एक प्रयत्न है कि विद्यालयी छात्रों के लिए ही नहीं अपितु श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित मूल्य समपूर्ण समाज का पथ प्रदर्षक है श्रीमद् भगवद् गीता प्रत्येक जीव के अन्तःकरण में व्याप्त होकर उसे मनुष्यत्व से देवत्व की और उन्मुख करने में सक्षम है। यदि श्रीमद् भगवद् गीता पर आधारित मूल्यों के विकास को प्रोत्साहित करें तो निष्चय ही सभ्य समाज की स्थापना हो सकती है।

ग्रंथ संदर्भ सूची

- खेमानि माला (2013) गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस में अन्तर्निहित मूल्यों का विश्लेषण एवं वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता का अध्ययन, पी.एच.डी. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
- शर्मा दीपचन्द्र (2010) श्रीमद् भागवत महापुराण के प्रमुख संवादो में वर्णित षिक्षा के विभिन्न आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पी.एच.डी. देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इन्दौर।
- मित्तल,एम.एल. (2008) उदीयमान भारतीय समाज मे षिक्षक, आगरा : अग्रवाल प्रकाषन।
- शर्मा,रा.ना.व षर्मा, रा.कु. (2006) शैक्षिक समाजषास्त्र नई दिल्ली : एटलांटिक पब्लिषर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स।
- गोस्वामी तुलसीदास श्री रामचरित मानस, गीता प्रेस गोरखपुर 2005।